GULAM-E-TAJUSHSHARIAH.SUNNI HANFI BERAILVI

MOHAMMAD ABDURRAHEEM KHAN QCADRI RAZVI JAMDA SHAHI .BASTI (UP)272002

KHATEEB WA IMAM MOTI MASJID.GULABRA.CHHINWWARA (M.P.)

WWW.ISSUU.COM/abdurrahimkhan आल इन्डिया रज़ा हिन्दी इस्लामिक लाइब्रेरी

WWW.Jamdashahi.blogspot.com_ khanjamdashahi@gmail.com Mob: 7415066579 7869154247

ज़िन्दगी में इन्क़ेलाब लाने के लिए, नसीहतें और क़ाबिले अ़मल अक़्वाल (अनमोल मोती) बुज़ुर्गाने दीन के अक़्वाल

बहुत ही बुरा है

अल्लाह तआ़ला के साथ शिर्क बहुत ही बुरा है।
मोमिनों के साथ अदावत बहुत ही बुरा है।
बुढ़ापे में ज़िना बहुत ही बुरा है।।
ग़रीबी में तकब्बुर बहुत ही बुरा है।
वालिदैन के साथ ज़ुल्म बहुत ही बुरा है।
ज़ालिम की तअ़रीफ बहुत ही बुरा है। हमसाए की औरत से बद कारी बहुत ही बुरा है।
हाकिमे वक़्त का झूट बोलना बहुत ही बुरा है
दीन में बिदअ़ते सय्यह बहुत ही बुरा है।

बयान मत कर

बे तहक़ीक़ बयान मत कर।
खुद ग़र्ज़ के सामने अपनी मुसीबत बयान मत कर।
हासिद के सामने अपनी आमदनी। बयान मत कर।
किसी के सामने अपनी बे हयाई के किस्से बयान मत कर।
कमज़ोर के सामने उस की कमज़ोरी बयान मत कर।
बीवी के सामने ग़ैर औरत की तअ़रीफ बयान मत कर।
अपनी ज़बान से अपनी खूबियां बयान मत कर।
किसी के मुंह पर उस की तअ़रीफ बयान मत कर।

बेहतर है

बदकार और बुरे आदमी की सोहबत से सांप की मुहब्बत बेहतर है।
झगड़ा मोल लेने से ग़म का खा लेना बेहतर है ।
बे मौक़ा बोलने की आ़दत से गूंगा हो जाना बेहतर है।
हराम के माल की मालदारी से मुफ़लिसी बेहतर है।
छछोरे आदमी से मदद और हदिया से फाक़ा बेहतर है।
खौ़फ व ज़िल्लत के हलवे से आज़ादी की खुश्क रोटी बेहतर है।
बे इज़्ज़ती की ज़िन्दगी से इज़्ज़त की मौत बेहतर है।

मुम्किन नहीं

जैसी सोहबत में बैठे वैसा न बने, मुम्किन नहीं।
हर काम में जल्दी करे और नुक़सान न उठाए, मुम्किन नहीं।
दुनया से दिल लगाए और परेशान न हो, मुम्किन नहीं।
हिम्मत व इस्तेक़लाल को शआ़र बनाए और मुराद को न पहोंचे मुम्किन नहीं।
ज़्यादा बातें करे और कोफ्त न उठाए , मुम्किन नहीं।
औ़रतों की सोहबत में बैठे, और रुस्वा न हो,मुम्किन नहीं।

पीले

कड़वी बात पी ले। बीमारी में दवा पी ले।
ताज़ा मीठा पी ले।
दुशमन के सामने आंसू पी ले।
रात को सोते वक़्त थोड़ा गरम दूध पी ले।
जिस दरिया से गुज़रे उस का पानी ले पी ले।
बे मौक़ा गुस्सा पी ले।

मत मार

मां का दिल मत मार ।
किसी का दिल मत मार ।
बच्चा के चेहरे और सर पर मत मार।
दूसरे के बच्चे को मत मार ।
पड़ोसी के पालतू जानवर को मत मार।
किसी को कमज़ोर समझ कर मत मार।
अपने से बड़े को मत मार।
हद से ज़्यादा बीवी को मत मार।
किसी मज़लूम को मत मार।

मत ठुकरा

मां बाप की मुहब्बत मत ठुकरा।
मिलती हुई रोज़ी मत ठुकरा ।
खाने पीने की चीज़ मत ठुकरा।
छोटी से छोटी नेअ़मत मत ठुकरा।
बहन की मुहब्बत मत ठुकरा।
अपने खैर ख़्वाहों की बात मत ठुकरा।

दूर भाग

बुरी सोहबत से दूर भाग।
तोहमत की जगह से दूर भाग।
झगड़े और मोज़मा बाज़ी से दूर भाग।
नशा बाज़ों की मज्लिस से दूर भाग।
फहश नाविलों और रिसालों और किताबों से दूर भाग।
अमीर से जब भूका हो जाए दूर भाग ।
कमीने से जब अमीर हो जाये। दूर भाग ।

मत बढ़ा

बुरे दोस्त मत बढ़ा।
बात मत बढ़ा ।
क़र्ज़ मत बढ़ा।
ऐ़श व इशरत मत बढ़ा।
ज़्यादा लोगों से बे तकल्लुफ़ी मत बढ़ा।
बद अ़अ़माली का बोझ मत बढ़ा।
पड़ोसी से दुशमनी मत बढ़ा।
आमदनी से ज़्यादा खर्च मत बढ़ा।।

दरगाह खुलने का समय

सुबह फजर बाद
दोपहर 12.30 बजे

दरगाह बन्द होने का समय

सुबह 11.30 बजे
रात 10.15 बजे

GULAM-E-TAJUSHSHARIAH.SUNNI HANFI BERAILVI

MUHAMMAD ABDURRAHEEM KHAN QUADRI RAZVI JAMDA SHAHI .BASTI (UP)272002

KHATEEB WA IMAM MOTI MASJID.GULABRA.CHHINWWARA (M.P.)

WWW.ISSUU.COM/abdurrahimkhan आल इन्डिया रज़ा हिन्दी इस्लामिक लाइब्रेरी

WWW.Jamdashahi.blogspot.com_ khanjamdashahi@gmail.com Mob: 7415066579 7869154247

ज़िन्दगी में इन्क़ेलाब लाने के लिए, नसीहतें और क़ाबिले अ़मल अक़्वाल (अनमोल मोती)बुज़ुरुगाने दीन के अक़्वाल

शिकस्त खाले

इल्म व हुनर क एज़हार करने में उस्ताज़ से शिकस्त खा ले ।
ज़बान चलाने में औ़रत से शिकस्त खा ले ।
बुरी आवाज़ से बोलने में गधहे से शिकस्त खा ले ।
खाने पीने में साथी से शिकस्त खा ले ।
माल खर्च करने में शेख़ी खोर से शिकस्त खा ले ।
लड़ाई लड़ने में बीवी से शिकस्त खा ले ।
खेल कूद में बच्चे से शिकस्त खा ले ।
अ़क़ल व समझ में वालिदैन से शिकस्त खा ले ।

आंख

आंख झुकती है तो ज़माने भर की हया अपने अन्दर समो लेती है।
आंख लगती है तो संगलाख चट्टानों को भी हेच बना देती है।
आंख उठती है तो रहगुज़ारों को भी गुलज़ार बना देती है।
आंख खुलती है तो कायनात के राज़ों से पर्दों खोल देती है।
आंख देखती है तो समन्दर की गहराईयों से मोती निकाल लेती है।
आंख मुस्कराती है तो कायनात की तमाम मअ़सूमियत को जज़्ब कर लेती है।
आंख सोती है तो सुहाने ख़्वाबों की आग़ोश में पहोंच जाती है।
आंख बोलती है तो अहले ज़बान को भी अंगुश्ते बदन्दां कर देती है।
आंख रोती है तो अर्शे मुअ़ल्ला को हिला देती है।

उन से भेद मत कह

जिस के ख़िलाफ तू ने कभी फेसला दिया उन से भेद मत कह।
जिस की भलाई तेरी बुराई हो उन से भेद मत कह ।
जिस को आज़माया न हो उन से भेद मत कह।
जिस की त़बीअ़त में शरारत हो उन से भेद मत कह।
जो तेरी त़रफ से ना उम्मीद हो गया हो उन से भेद मत कह।
जो तेरे दुशमन के पास बैठता हो उन से भेद मत कह।
जो औ़रत या लड़का हो उन से भेद मत कह।

मत भूल

अपनी मौत को मत भूल
खुदा को मत भूल
दूसरे को क़र्ज़ को मत भूल
अपने वअ़दे को मत भूल
मां बाप की वसिय्यत को मत भूल
ज़िन्दगी के सह़ी मक़सद को मत भूल
अ़ज़ीज़ व अ़क़ारिब को मत भूल
सिला रह़मी को मत भूल

मत चला

बड़ों के सामने ज़बान मत चला।
बात करने में आंखें और हाथ मत चला।
जान बूझ कर खोटा सिक्का मत चला।
मुहल्लाह और बाज़ार में तेज़ सवारी मत चला।
अपनी जानिब से कोई बुरी रस्म मत चला।
दूसरों के दरमयान अपनी बात मत चला।
कभी किसी को ग़लत। रास्ता पर मत चला।

क़बूल करे

नसीह़त की उज़्र चाहे कड़वी हो क़बूल करे ।
भाई का उज़्र चाहे दिल न माने क़बूल करे।
दोस्त का हदिया चाहे हक़ीर हो क़बूल करे।
ग़रीब की दअ़वत चाहिए तक्लीफ हो क़बूल करे।
मां बाप का हुक्म चाहे ना गवार हो क़बूल करे।
ग़ल्ती चाहे ज़िल्लत हो क़बूल करे।
नेक बीवी की मुहब्बत चाहे बद सूरत हो क़बूल करे।

खामोशी

खामोशी : इबादत है बग़ैर मेहनत की
खामोशी : हैबत है बग़ैर सल्तनत के ।
खामोशी : क़िला है बग़ैर दीवार के ।
खामोशी : कामयाबी है बग़ैर हथियार के
खामोशी : आराम है किरामन कातिबीन का ।
खामोशी : क़िला है मोमिनीन का।
खामोशी : शेवा है आजिज़ों का।
खामोशी :दबदबा है हाकिमों का ।
खामोशी : ख़ज़ाना है हिक्मतों का ।
खामोशी : जवाब है जाहिलों का।
किसी का ऐ़ब ज़ाहिर मत कर
दिल का भेद ज़ाहिर मत कर
अमानत की बात ज़ाहिर मत कर
पूरी त़ाक़त ज़ाहिर मत कर
सफर करने की सम्त (दिशा)ज़ाहिर मत कर
अपनी तिजारत का फायदा या नुक़सान ज़ाहिर मत कर।
ज़्यादा ज़रुरत ज़ाहिर मत कर

होता है

ज़्यादा क़स्में खाने वाला झूटा होता है
ज़्यादा बातें करने वाला बे वक़ूफ़ होता है
ज़्यादा हंसने वाला मुर्दा दिल होता है

ज़रुर कर :

तब्लीग़ ज़रुर कर ज़रुर कर।
जवानी में इबादत ज़रुर कर
मां बाप की ख़िदमत ज़रुर कर
दस्तर ख़्वान को वसीअ़ ज़रुर कर
सदक़ा और ख़ैरात ज़रुर कर
सच्चे दोस्त की तलाश ज़रुर कर
हर बड़े का अदब ज़रुर कर
इ़ज़्ज़त हासिल करने की कोशिश। ज़रुर कर

दूर रहेगा

बद मिज़ाज मुहब्बत से दूर रहेगा ।
बद मआ़मला इ़ज़्ज़त से दूर रहेगा ।
बे अदब खुश नसीबी से दूर रहेगा ।
लालची इत्मीनान से दूर रहेगा ।
बख़ील सच्चे दोस्त से दूर रहेगा ।
आराम तलब तरक़्क़ी से दूररहेगा ।
दौलत जमा करने वाला
दिल के चैन से दूर रहेगा